पवित्र आत्मा कौन है?

अति महत्वपूर्ण प्रश्न

आर.सी. स्प्रोल

पवित्र आत्मा कौन है?

अति महत्वपूर्ण प्रश्नों की पुस्तिकाएँ निश्चित् मसीही सच्चाइयों के विषय में एक सहज परिचय प्रदान करती हैं। इस बढ़ते हुए संग्रह में निम्न शीर्षक सम्मिलित हैं:

यीशु कौन है?

क्या मैं बाइबल पर भरोसा कर सकता हूँ?

क्या प्रार्थना बातों को बदलती है?

क्या मैं परमेश्वर की इच्छा को जान सकता हूँ?

मुझे इस संसार में कैसे जीना चाहिए?

नया जन्म होने का अर्थ क्या है?

क्या मुझे निश्चय हो सकता है कि मैं बचा हुआ हूँ?

विश्वास क्या है?

मैं अपने दोषबोध के साथ क्या कर सकता हूँ?

त्रिएकता क्या है?

शेष श्रृंखला को देखने के लिए,
कृपया जाएँ: *https://margsatyajeevan.com*

अप्र

पवित्र आत्मा कौन है?

आर.सी. स्प्रोल

forthetruth.in

Who Is the Holy Spirit?
© 2012 by R.C. Sproul

Originally published by Ligonier Ministries
421 Ligonier Court, Sanford, FL 32771
Ligonier.org

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means—electronic, mechanical, photocopy, recording, or otherwise—without the prior written permission of the publisher, Ligonier Ministries. The only exception is brief quotations in published reviews.

Cover design: Ligonier Creative
Interior typeset: Katherine Lloyd, The DESK

First Hindi Translation and Print 2023
This Hindi edition is issued in arrangement with Ligonier Ministries, USA.
Translated and published by 'For The Truth Press Pvt. Ltd.'
For sales and distribution in India, and not for export therefrom.

Hindi ISBN: 978-81-960303-8-4 (Paperback)
Hindi ISBN: 978-81-960303-4-6 (eBook)

For the Truth is a publishing company which exists to print, publish & distributes resources for the Church in India.

प्रथम हिन्दी अनुवाद एवं संस्करण 2023
यह हिन्दी संस्करण लिग्निएर मिनिस्ट्रीज़, के प्रायोजन से 'फॉर द ट्रूथ प्रेस प्राइवेट लिमिटेड' द्वारा अनुवादित एवं प्रकाशित किया गया है।

अधिक संसाधनों के लिए *मार्ग सत्य जीवन* की वेबसाइट पर जाएँ:
https://margsatyajeevan.com

विषय सूची

प्रस्तावना 1

एक तृतीय व्यक्ति 5

दो जीवन दाता 15

तीन अधिवक्ता (सहायक) 27

चार पवित्र बनाने वाला 35

पाँच अभिषेककर्ता 47

छः प्रदीपक 63

प्रस्तावना

जब मैं सितम्बर 1957 में मसीही बना, तो मैंने अपने आपको एक गम्भीर दुविधा में पाया। मेरा विवाह होने के लिए मेरी मंगनी हो चुकी थी, किन्तु जब मैंने अपनी मंगेतर को अपने हृदय-परिवर्तन *(conversion)* के विषय में बताया, तो उसने सोचा कि मैं पागल हो गया हूँ। यह बात तो व्याकुल करने के लिए पर्याप्त थी, किन्तु अब मैं यह भी जान गया था कि मुझे किसी अविश्वासी के साथ विवाह नहीं करना चाहिए और तब मैं इस सोच में पड़ गया कि क्या मैं उस स्त्री से विवाह कर पाऊँगा जिससे मैं प्रेम करता हूँ। इस दुविधा के किसी समाधान के बिना ही कई महीने बीत गये।

अन्ततः, बसन्त ऋतु की छुट्टियाँ आईं। मेरी मंगेतर जिस महाविद्यालय में पढ़ती थी वह वहाँ से पिट्सबर्ग अपने घर जाने की योजना बना रही थी, और मैंने उसे मनाया कि वह मेरे महाविद्यालय पर रुककर, मेरे साथ परिसर के एक बाइबल अध्ययन में उपस्थित हो और फिर लड़कियों के छात्रावास में एक रात्रि बिताए। मुझे कोई भी ऐसी अन्य बात स्मरण नहीं है जिसके लिए

मैंने प्रार्थना करने में इससे अधिक समय व्यतीत किया हो। मैंने उसके आने से पूर्व लगभग पूरा दिन अपने घुटनों पर यह प्रार्थना करते हुए बिताया कि परमेश्वर उसके जीवन में कार्य करे। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यदि वह शीघ्र मसीही नहीं बनती है तो मुझे मंगनी को तोड़ना होगा, भले ही मैं ऐसा नहीं करना चाहता था।

हम उस रात्रि बाइबल अध्ययन में गये और वह उस अध्ययन में सम्पूर्ण समय बिना कोई शब्द कहे बैठी रही। तद्पश्चात्, मैं उसे लड़कियों के छात्रावास में ले गया, और वह अभी भी अत्यन्त शान्त थी। तथापि अगली सुबह जब मैं उससे मिलने के लिए गया, तो वह बाहर ऐसे आयी मानो कि बादलों पर चल रही हो। उसने मुझे बताया कि उसे सोने में कठिनाई का आभास हुआ क्योंकि उस रात्रि से पहले उसके साथ कुछ घटित हुआ था। वह रात्रि में बार-बार निद्रा से जागती थी तथा अपने आपको कचोटती थी और फिर यह पूछती थी कि "क्या मेरे पास अभी भी वह है?" फिर प्रत्येक बार वह अपने को बताती थी "हाँ, मेरे पास अभी भी वह है," और फिर वह वापस सोने चली जाती थी। उस पूर्व रात्रि को पवित्रशास्त्रों के अध्ययन के द्वारा ख्रीष्ट की ओर उसका हृदय-परिवर्तन हुआ था।

मेरे लिए उस अद्भुत सुबह की एक सबसे स्पष्ट स्मृतियों में से एक क्षण वह है जब हम लोग अपनी गाड़ी में प्रवेश कर रहे थे। और जब वह मुझे अपने अनुभव के विषय में बता रही थी, तो उसने मेरी ओर बड़े उत्साह के साथ देखा

और कहा, "अब मैं जानती हूँ कि पवित्र आत्मा कौन है।" निःसन्देह, वर्षों से वह कलीसिया में उपस्थित रहती थी। उसने पवित्र आत्मा का वर्णन होते हुए सुना था। उसने परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम को आशीष वचन में उद्घोषित होते हुए सुना था। परन्तु अब सबसे पहली बार उसे एक आभास हुआ था कि आत्मा वास्तव में कौन है।

मेरी मंगेतर का जो कि अब मेरी पत्नी है, वह कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण था। ध्यान दीजिए कि उसने कहा, "अब मैं जानती हूँ कि पवित्र आत्मा *कौन* है," न कि, "अब मैं जानती हूँ कि पवित्र आत्मा *क्या* है।" अपने हृदय-परिवर्तन में, वह मसीहियत को एक अमूर्त भाव से हटाकर परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध के रूप में समझने की ओर अग्रसर हुई। और सर्वप्रथम सत्यों में से एक जिसको उसने समझा था वह यह था कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, न कि कोई वस्तु।

यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि मसीही लोग जानें कि पवित्र आत्मा कौन है और उनके जीवनों में वह जिस अत्यावश्यक भूमिका को निभाता है उसके विषय में वे कुछ समझें। इसीलिए मैंने यह पुस्तिका लिखी है। निश्चित् ही, पवित्र आत्मा के विषय में बाइबलीय शिक्षा इतनी अधिक वृहद् है कि इस आकार की पुस्तिका में उससे उचित रीति से निहित नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तिका में मेरा उद्देश्य केवल इस प्रश्न का सबसे अधारभूत उत्तर देना है कि आत्मा कौन है और फिर संक्षेप में उन महत्वपूर्ण भूमिकाओं को समझाना

है जिन्हें वह विश्वासियों के जीवन में निभाता है। इस विषय पर और विस्तार से अध्ययन करने के लिए मैं आपको उत्साहित करूँगा कि आप मेरी पुस्तक *पवित्र आत्मा का रहस्य (The Mystery of the Holy Spirit)* को पढ़ें।

मेरी प्रार्थना है कि आत्मा पर यह छोटी पुस्तिका आपको उस परमेश्वर अर्थात् पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ एक गहरे सम्बन्ध में लाएगी जिससे आप प्रेम करते हैं और जिसकी आप सेवा करते हैं।

अध्याय एक

तृतीय व्यक्ति

The Third Person

मसीही होने के कारण, हम परमेश्वर के प्राणी *(being)* के विषय में एक ऐतिहासिक सूत्र को अंगीकार करते हैं। हम कहते हैं, "परमेश्वर सारतत्व *(essence)* में एक है और व्यक्ति *(person)* में तीन है।" दूसरे शब्दों में, परमेश्वर त्रिएक *(triune)* है; वह एक त्रिएकता *(Trinity)* है। इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वरत्व *(Godhead)* के भीतर तीन व्यक्ति हैं। इन व्यक्तियों को ईश्वरविज्ञान में भिन्न चरित्रों के रूप में समझा जाता है। इन तीनों, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के मध्य में भिन्नताएँ, वास्तविक *(real)* भिन्नताएँ हैं किन्तु सारतात्विक *(essential)* भिन्नताएँ नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वरत्व का एक ही सारतत्व है, तीन नहीं। मनुष्य होने के कारण हमारे

अनुभव के अनुसार, प्रत्येक जन जिससे हम भेंट करते हैं वह एक पृथक प्राणी है। एक व्यक्ति *(person)* का अर्थ एक प्राणी *(being)* है, और ऐसा ही इसके विपरीत भी है। परन्तु परमेश्वरत्व में एक प्राणी है, तीन व्यक्तियों के साथ। हमें इस भेद को बनाए रखना है अन्यथा हम एक प्रकार के बहुदेववाद *(polytheism)* में फँस जाएँगे। हम परमेश्वरत्व के तीन व्यक्तियों को ऐसे तीन प्राणियों के रूप में देखने लगेंगे जो कि तीन भिन्न ईश्वर हैं।

हम में से कोई भी त्रिएकता की गहराईयों को सम्पूर्णता से नहीं माप सकता है, परन्तु हम उसको और उत्तमता से समझने के लिए कुछ छोटे पगों को बढ़ा सकते हैं। यहाँ पर ये शब्द *अस्तित्व (existence)* और *निर्वाह (subsistence)* हमारी सहायता कर सकते हैं।

अस्तित्व *(Existence)* और निर्वाह *(Subsistence)*

एक खेल जो मैं अपने सेमिनरी के छात्रों के साथ खेलता था वह था उनसे यह प्रश्न पूछना कि, "क्या परमेश्वर अस्तित्व *(exist)* में है?" वे कहते थे, "अवश्य परमेश्वर अस्तित्व में है।" फिर मैं कहता था, "नहीं परमेश्वर अस्तित्व में नहीं है," और तब मुझे उनके मुखों पर प्रकट हुए वीभत्स भाव को देखने में सर्वदा आनन्द आता था जब वे यह विस्मय करने लगते थे कि कहीं उनके प्राध्यापक ने मसीहियत को त्याग तो नहीं दिया है तथा अपना विश्वास खो दिया है। परन्तु मैं तुरन्त ही उन पर दया खाते हुए उन्हें यह समझाता था कि जब मैं दृढ़तापूर्वक यह कह रहा था कि परमेश्वर अस्तित्व में नहीं है, तो मैं उनके साथ दर्शनशास्त्र का एक छोटा खेल खेल रहा था।

अस्तित्व (एगज़िस्ट-exist) शब्द लातीनी भाषा के *एकसिस्टारे*

(existare) से आता है, जिसका अर्थ है कि "उनमें से पृथक खड़े होना।" तो *एगज़िस्ट* शब्द का अक्षरशः अर्थ है कि "पृथक खड़े होना।" इसका तात्पर्य आवश्यक रीति से यह नहीं है कि यदि आप अस्तित्व में हैं तो जो कुछ आप करते हैं उसमें आप उत्कृष्ट हैं। स्पष्ट प्रश्न यह है कि एक प्राणी जो अस्तित्व में है वह किस अर्थ में पृथक खड़ा होता है?

अस्तित्व के विचार की जड़ें प्राचीन दर्शनशास्त्र में पायी जाती हैं, जब दर्शनशास्त्री प्राणी *(being)* के प्रश्न को लेकर अत्यन्त गम्भीर थे। हम भी इस प्रश्न के विषय में गम्भीर हैं; वास्तव में, जब हम परमेश्वर और स्वयं में भेद करते हैं तो हम उसको एक सर्वोच्च प्राणी *(Supreme Being)* के रूप में तथा स्वयं को मानव प्राणी *(human beings)* के रूप में पहचानते हैं। किन्तु, यह भेद थोड़ा सा भ्रमित करने वाला है। यह दोनों विवरण *प्राणी* शब्द का उपयोग करते हैं, इसलिए हम परमेश्वर और हमारे बीच में भिन्नता को देखने के लिए विशेषणात्मक विशेषक *(adjectival qualifiers)* की ओर देखते हैं: वह सर्वोच्च है और हम मानव हैं। यथार्थ में तो, परमेश्वर और मानव के बीच में मुख्य भेद तो स्वयं प्राणी का ही है। परमेश्वर विशुद्ध प्राणी है, एक ऐसा प्राणी जिसके पास स्वयं में ही अनन्तकाल से जीवन है। मानव प्राणी तो एक जीव है, एक ऐसा प्राणी जिसका क्षण प्रति क्षण का अस्तित्व सर्वोच्च प्राणी के अस्तित्व पर निर्भर करता है। परमेश्वर का प्राणी किसी बात पर निर्भर नहीं है और न ही किसी से व्युत्पन्न *(derived)* होता है। उसमें स्वयं ही में और स्वयं से अस्तित्व में होने की सामर्थ्य है।

जब प्राचीन दर्शनशास्त्री अस्तित्व के विषय में बात करते थे और वे लातीनी भाषा के शब्द का उपयोग करते थे जिसका अर्थ था "उनमें से पृथक खड़े होना," तो वे यह कह रहे थे कि अस्तित्व में होने का अर्थ है प्राणियों में

We want to see men and women around the world connect the deep truths of the Christian faith to everyday life.

Order your copy of this title, download the digital version, or browse thousands of resources at ***Ligonier.org****.*

LIGONIER MINISTRIES